यीशुः परमेश्वर हमारे साथ

इम्मानुएल जिसका अर्थ ''परमेश्वर हमारे साथ'' है बाइबल में चार बार आता है। तीन बार (यशायाह 7:14; 8:8, 10) यह बहुत ही नकारात्मक, विनाशक अर्थ में मिलता है: परमेश्वर दण्ड देने के लिए हमारे साथ है। एक बार (मत्ती 1:23) यह सकारात्मक अर्थात रचनात्मक अर्थ में मिलता है: परमेश्वर आशीष देने के लिए हमारे साथ है।

दण्ड देने के लिए परमेश्वर हमारे साथ है

यशायाह 7:14 में *इम्मानुएल* शब्द का पहली बार इस्तेमाल एक मिश्रित आशीष के रूप में मिलता है। राजा आहाज़ धोखेबाज था। परमेश्वर ने यशायाह को यह घोषणा करने के लिए भेजा था कि यहूदा को जिस पर आहाज़ शासन करता था, उजाड़ने की सूरिया और इस्राएल को अनुमति नहीं दी जाएगी। आहाज़ ने जो एक दुष्ट और मूर्तिपूजक था, यशायाह की बात की परवाह नहीं की, क्योंकि इस दुष्ट राजा को परमेश्वर पर भरोसा नहीं था।

यशायाह ने आहाज़ से कहा, कि वह यह प्रमाणित करने के लिए कोई भी चिह्न मांगे कि परमेश्वर यहूदा को नहीं छोड़ेगा। ''चाहे वह गहिरे स्थान का हो, वा ऊपर आसमान का हो'' (यशायाह 7:11ख)। परन्तु आहाज़ ने चिह्न मांगने से इन्कार कर दिया। सूरिया और इस्राएल के विरुद्ध शक्तिशाली अश्शूर को घूस देने की बात में, उसने झूठ मूठ की ही पवित्र घोषणा की: ''मैं नहीं मांगने का, और मैं यहोवा की परीक्षा नहीं करूंगा'' (यशायाह 7:12)। ऐसी धोखेबाजी से परमेश्वर थक गया था और सहायता करने के लिए उसका धैर्य समाप्त हो गया था। उसने घोषणा की कि वह बिन मांगे चिह्न अर्थात दण्ड का चिह्न दुष्ट आहाज़ को देगा: ''इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिह्न देगा। सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।'' *हाल्मह* नामक एक विशेष युवती जिसका अर्थ ''जवान स्त्री,'' ''युवती'' या ''कुंवारी'' है,[1] ने मां बनना था और अपने बच्चे का नाम *इम्मानुएल* रखना था जिसका अर्थ है, ''परमेश्वर हमारे साथ।'' आहाज़ के समय के संदर्भ में, बच्चे का नाम दण्ड देने का संकेत था। परमेश्वर के आने से, यहूदा पर अकाल, विपत्ति, कांटों तथा झाड़ियों का कष्ट आना था। आहाज़ के विरुद्ध तत्काल धमकियां तो हटाई जानी थीं परन्तु उसकी दुष्टता तथा दोगलेपन का दण्ड उसे अवश्य मिलना था अर्थात परमेश्वर ने अश्शूर को यहूदा के नगरों को उजाड़ने और

यरूशलेम पर कब्ज़ा करने की अनुमति दे देनी थी और अकाल पड़ने थे। देश में यदि कोई गाय को जीवित रख सके और जंगली शहद को ढूंढ़ पाए, तो उसने दही और शहद की अपर्याप्त खुराक को बनाए रखने के योग्य होना था। विशेष पुत्र *इम्मानुएल* जिसका चिह्न देने की भविष्यवाणी की गई थी, भी इस सीमित खुराक पर पलना था। *इम्मानुएल* शब्द के पहले इस्तेमाल का संदर्भ कड़वा-मीठा है परन्तु अधिकतर यह कड़वा ही है।

इम्मानुएल शब्द (यशायाह 8:8) का दूसरा इस्तेमाल इसी संदर्भ का भाग है। यहूदा के देश को ही *इम्मानुएल* कहा जाता है भाव, यह कि यहूदियों को दण्ड देने के लिए परमेश्वर स्वयं इस देश में आया।

इसी प्रकार *इम्मानुएल* (यशायाह 8:10) शब्द का तीसरा इस्तेमाल कष्ट के कड़वेपन का उन्हीं दो बातों में जिनमें इसके पहले दो इस्तेमाल मिलते हैं, संदेश देता है। व्याकुल और परेशान यहूदियों के लिए अश्शूर को हराने का परामर्श लेना व्यर्थ होना था; क्योंकि, देखो, *इम्मानुएल!* उन पर भारी एक मूर्तिपूजक सेना के रूप में परमेश्वर यहूदा के साथ था, और अच्छी से अच्छी यहूदी युद्ध नीति से परमेश्वर को पीछे नहीं हटाया जा सकता था।

इम्मानुएल शब्द के नये नियम के इन तीनों रूपों में कुछ सुखद मिल सकता है।

हमें आशीष देने के लिए परमेश्वर हमारे साथ है

बाइबल के छात्र लम्बे समय से ध्यान देते रहे हैं कि कुछ आयतों को दो अर्थों के लिए दिया गया था, इनमें से एक का तो निकट अर्थ है और दूसरे का दूर का। यशायाह 7:14 दो अर्थों वाली आयतों में सबसे प्रसिद्ध है। आहाज़ के दिनों में उसे मिले *इम्मानुएल* नाम से एक पूर्वाभास था, कि परमेश्वर दण्ड देने के लिए यहूदा के साथ था। परन्तु, आठवीं शताब्दी की उस आयत में एक और भविष्यवाणी छिपी हुई थी। यूसुफ और मरियम के समय *इम्मानुएल* नामक एक और बालक का जन्म होना था (मत्ती 1:23)। वह भी एक चिह्न होना था, न केवल अपने नाम के कारण, बल्कि इसलिए कि उसका पिता कोई मनुष्य नहीं था। वह सचमुच ''परमेश्वर हमारे साथ'' था।

यदि यीशु का पिता कोई मनुष्य होता, तो उसने *इम्मानुएल,* अर्थात ''परमेश्वर हमारे साथ'' उसी अर्थ में होना था जैसे दूसरे बच्चे होते हैं। दूसरे सभी बच्चों की तरह उसके माता और पिता होते, जिससे वह दूसरों से किसी प्रकार से अलग न होता। इसलिए, आठवीं शताब्दी में यीशु का नाम *इम्मानुएल* रखने का बहुत महत्व था। आहाज़ के दिनों का वह अज्ञात युवक अपने आप में किसी भी प्रकार विलक्षण नहीं था; केवल उसका नाम ही क्रोध में परमेश्वर का आना था। यूसुफ के समय का प्रसिद्ध युवक अपने आप में विलक्षण था; वह अपने नाम से ही एक चिह्न से बढ़कर था: वह मनुष्य के रूप में परमेश्वर का आना था।

यशायाह 7 और 8, अन्य स्थानों पर मिलने वाले *इम्मानुएल* की मत्ती 1:23 वाले *इम्मानुएल* की महिमा के विचार की सुन्दरता से कोई तुलना नहीं है। नये नियम के उपयोग में, परमेश्वर हमारा ''न्याय करने'' (यूहन्ना 3:17) नहीं, बल्कि इसलिए आया कि हम ''उसके द्वारा उद्धार पाएं।'' *इम्मानुएल* का पुराने नियम का उपयोग केवल ''दाऊद के

घराने'' (यशायाह 7:13) के लिए ही था; नये नियम के उपयोग का महत्व ''सारे जगत'' के लिए है (1 यूहन्ना 2:2)।

देखिए, *इम्मानुएल!* परमेश्वर के स्वभाव का सही प्रतिनिधि मनुष्य बन गया (इब्रानियों 1:3; यूहन्ना 1:14)। वह जो परमेश्वर था, अपनी सृष्टि के पास आया और लहू और मांस में सहभागी हो गया (यूहन्ना 1:1, 11; इब्रानियों 2:14)। ''क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है'' (कुलुस्सियों 2:9)। परमेश्वर मसीह में था (यूहन्ना 10:37, 38; 14:10, 11, 20क)। लिखा है, ''परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उस ने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है'' (2 कुरिन्थियों 5:19)।

पाद टिप्पणियां

[1]एल्माह का अर्थ एक विवाहित या अविवाहित युवती हो सकता है (जैसे *एलम,* जवान, 1 शमूएल 17:56; 20:22), परन्तु विवाहित *एल्माह* के लिए बाइबल में कोई संदर्भ नहीं मिलता है। *एल्माह* के पुराने नियम के सात स्थानों में ''विवाह के योग्य परन्तु विवाहित नहीं'' की एक परिभाषा लागू की जाती है (उत्पत्ति 24:43; निर्गमन 2:8; भजन 68:25; नीतिवचन 30:19; श्रेष्ठगीत 1:3; 6:8; यशायाह 7:14)। *एल्माह* के इस्तेमाल से (*इश्शा* जिसका अर्थ ''स्त्री, पत्नी'' या *नेगेबाह* अर्थात ''नारी'' के बजाय) संकेत मिलता है कि यशायाह 7:14 एक अविवाहित लड़की का संकेत देता है। परन्तु, इसका अर्थ यह नहीं कि कुंवारी से जन्म की भविष्यवाणी आहाज़ के दिनों के लिए की गई थी। धर्म शास्त्र केवल इतना कहता है कि जो यशायाह के बात करते समय कुंवारी थी उसने बाद में मां बनना था। यूसुफ और मरियम के समय की बात बिल्कुल ही अलग है। कुंवारी से जन्म की कोई भी व्याख्या मत्ती 1:23 के संदर्भ से न्याय नहीं करती। (कई बार इन शब्दों का इस्तेमाल बहुत कम होता है। *बेथुलाह* और *पारथिनोस,* को सामान्यत: कुंवारेपन के लिए विशेष रूप से माना जाता है, और कभी-कभी उन्हें उनके लिए भी इस्तेमाल किया जाता है जो कुंवारियां नहीं हैं; योएल 1:8; उत्पत्ति 34:3; LXX।)